



DR. MEENAKSHI JAIN

Dr. Meenakshi Jain is a historian with keen interest in the study of Indian civilization.

2. Born on 9th July, 1953, Dr. Jain did her graduation and post-graduation from the University of Delhi. Subsequently she also obtained her Ph.D from the University of Delhi. She taught for several decades in the History Department of Gargi College, University of Delhi. She was awarded Fellowship at the Nehru Memorial Museum and Library, Delhi. She has also been Senior Fellow, Indian Council of Social Science Research.

3. Dr. Jain has authored several books which are notable for presenting a fresh perspective on some complex issues of Indian history. Her book, Parallel Pathways, focused on lesser discussed dimensions of eighteenth century India. She has authored two books on the Ayodhya movement, which have been widely appreciated for their balanced and comprehensive approach.

4. Dr. Jain has done an exceptional work of the issue of Sati, which highlights its rare and limited occurrence. The practice was exaggerated in the eighteenth-nineteenth centuries to prepare the case for the White Man's civilizing mission. Dr. Jain's account of the history of temples and images from early times has been regarded as among the most significant such works in the last half century.

5. Dr. Jain is co-author of a work on the pact between M.C. Rajah and B.S. Moonje, which presents rare documents on an almost forgotten chapter in Indian history. The Rajah-Moonje Pact of 1932, soon after the Second Round Table Conference in London, was the first agreement on reservations between caste Hindus and the Depressed Classes. It preceded the Poona Pact which was signed a few months later.

6. Dr. Jain has also prepared a three-volume anthology on the writings of foreign travelers to India from the eighth to the mid-nineteenth century. She has also undertaken deep study of caste in political and social mobilization in India and has contributed to several books on the subject. She wrote the Medieval India textbook for NCERT in 2002.





डॉ मीनाक्षी जैन

डॉ. मीनाक्षी जैन एक इतिहासकार हैं जिन्हें भारतीय सभ्यता के अध्ययन में गहरी रुचि है।

2. 9 जुलाई, 1953 को जन्मी, डॉ. जैन ने दिल्ली यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन किया। बाद में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएच.डी की डिग्री भी हासिल की। उन्होंने कई दशक तक दिल्ली विश्वविद्यालय के गार्गी कॉलेज के इतिहास विभाग में अध्यापन कार्य किया। उन्हें नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी, दिल्ली की फैलोशिप प्रदान की गई। वह इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च की सीनियर फैलो भी रह चुकी हैं।

3. डॉ. जैन ने भारतीय इतिहास के कुछ जटिल मुद्दों को नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने के लिए कई उल्लेखनीय पुस्तकें लिखी हैं। उनकी पुस्तक 'पैरेलल पाथवे', अठारहवीं शताब्दी के भारत के कम चर्चित आयामों पर केंद्रित थी। उन्होंने अयोध्या आंदोलन पर दो पुस्तकें लिखी हैं, जिन्हें उनके संतुलित और विशद दृष्टिकोण के लिए व्यापक रूप से सराहा गया है।

4 डॉ. जैन ने सती प्रथा पर असाधारण कार्य किया है, जिसके अंतर्गत इस दुर्लभ और बहुत कम होने वाली घटना पर प्रकाश डाला गया है। अठारहवीं–उन्नीसवीं शताब्दी में इस प्रथा को बढ़ा–चढ़ाकर पेश किया गया था ताकि इसे गोरे लोगों के सभ्य मिशन के तौर पर पेश किया जा सके। प्राचीनकाल के मंदिरों और छवियों के इतिहास के बारे में डॉ. जैन की व्याख्या को पिछली आधी सदी में इस तरह के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक माना गया है ।

5. डॉ. जैन, एम.सी. राजा और बी.एस. मूनजे के बीच समझौते पर लिखी गई एक पुस्तक की सह–लेखिका हैं, जो भारतीय इतिहास में लगभग भूले–बिसरे अध्याय पर एक दुर्लभ दस्तावेज है। लंदन में दूसरे दौर के गोल मेज सम्मेलन के तुरंत बाद 1932 का राजा–मूनजे समझौता, हिंदू जाति और पीड़ित वर्गों के बीच आरक्षण पर पहला समझौता था। यह समझौता, पूना समझौते से कुछ महीने पहले किया गया था।

6. डॉ. जैन ने आठवीं से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक भारत में विदेशी यात्रियों की रचनाओं पर तीन खंड के एक संकलन की भी रचना की है। उन्होंने भारत में राजनीतिक और सामाजिक उत्थान के संदर्भ में जाति का गहन अध्ययन भी किया है और इस विषय पर कई पुस्तक लिखी हैं। उन्होंने 2002 में एनसीईआरटी के लिए मध्यकालीन भारत पाठ्यपुस्तक लिखी थी।